शांतिवन। सिसको की तरफ से ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी को प्राप्त `अवार्ड फॉर बेस्ट वॉटर एन्फ्रास्ट्रक्चर' राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को दिखाते हुए ब्र.कु. शंभू।

सिवान-बिहार। शिवजयंती के अवसर पर `सर्वधर्म स्नेह मिलान' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए फादर मणिहरी मसीह, सरदार पुराण सिंह, ब्र.कु. सुधा, मौलाना असलम नज़मी, डॉ. जे.एन.प्र. जी व अन्य।

मोहाली-पंजाब। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम व रैली का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. रमा, उषा शर्मा,वी.पी.,शिवा टेम्पल, इमाम जुबैर अहमद, के.के. सेठ,प्रेसीडेंट,रोट्री व अन्य।

मोतिहारी-बिहार। 80वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महापर्व पर निकाली गई शोभायात्रा का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए विधायक प्रमोद कुमार। साथ हैं ब्र.कु. मीना, अशोक वर्मा, तारकेश्वर प्रसाद, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. मीरा व अन्य।

नूह-हरियाणा। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव मंदिर में लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी में जी.एस. मलिक, श्रीमती मलिक व साथियों को राजयोग का महत्व बताते हुए ब्र.कु. संजय हंस।

नरकटियागंज-बिहार। गीतापाठशाला द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर निकाली गई शोभायात्रा एवं शिवलिंग की झाँकी में उपस्थित हैं ब्र.कु. अबिता व अन्य।

जीवन में वैल्यूज़ तो चाहिए ना...!!!

-ब्र.कु.योगिनी,मुम्बई

जब हम सक्सेस शब्द का अर्थ करते हैं तो आप देखेंगे कि जीवन में सभी को चार बातों में सफलता चाहिए, सबसे पहले एक व्यक्तिगत सफलता, दूसरा कौटूम्बिक सफलता, तीसरा सामाजिक सफलता और चौथा व्यवसायिक सफलता। बिज़नेस में भी सक्सेस, क्योंकि जब आप सक्सेस शब्द (SUCCESS) को लेते हैं तो उसका अर्थ होता है:-

S = सेटिंग गोल। हमें अपने जीवन में हमेशा अपने लक्ष्य को सेट करना चाहिए, क्योंकि जैसा लक्ष्य होता है वैसे ही हमारे अंदर लक्षण आते जाते हैं।

U = माना यूटिलाइज़ द टाइम (समय का उपयोग)। कहा जाता है कि दुनिया में किसी का पैसा गया तो वापस आ जायेगा, कोई भी चीज़ खोयी हुई वापस आ जायेगी, लेकिन समय एक बार हमारे हाथ से गया तो वह कभी वापस नहीं आता है। इसलिए हमें कैसे अपना टाइम मैनेजमेंट करना है वो करना है।

C = करेज। हमें स्वयं में हिम्मत, साहस होना चाहिए। लेकिन इसके लिए ये सोचना है कि हम एक कदम तो आगे बढ़ें। यदि हम एक कदम आगे बढ़ते हैं तो वो हमें हज़ार कदम मदद करने आता है, कहा भी जाता है कि `हिम्मते मरदा तो मददे खुदा' तो हिम्मत जो है वो जीवन में बहुत ज़रूरी है।

C = माना क्रियेटिविटी। कोई भी कार्य जो हमें करना है वह हमें रचनात्मक कार्य करना है।

E = एफर्ट, पुरुषार्थ। अगर हम बैठे रहेंगे, पुरुषार्थ ही नहीं करेंगे तो कोई भी कार्य में सफलता मिलने वाली नहीं है।

तो जीवन में कोई भी कार्य में दृढ़ता जो है वो बहुत ज़रूरी है। कहा जाता है `डिटरमिनेशन इज़ द की ऑफ सक्सेस' (दृढ़ता सफलता की चाबी है)। तो हमें दृढ़ता से कार्य करना है, पुरुषार्थ करना है। और

S = सेनसिबल प्लानिंग। हमेशा सहयोग के अंदर एक शक्ति होती है।

एक बार ये पांच अंगुली थी हरेक ने कहा कि मैं बड़ी। अंगूठे के बगल वाली अंगुली ने कहा कि, कहा जाता है कि सबका मालिक एक है तो मैं बड़ी। इस तरह से उनके बीच आपस में लड़ाई हो गई। बीच वाली अंगुली ने कहा कि मैं तो हूँ ही बड़ी, तो मैं बड़ी हो गई। तर्जनी वाली अंगुली ने कहा कि कोई भी कार्य करना होता है तो स्वास्तिक करते हैं या किसी को तिलक देते हैं तो सबकुछ तो इसी अंगुली (अनामिका) से किया जाता है, तो मैं बड़ी हो गई। सबसे छोटी अंगुली ने कहा कि नहीं.... नहीं.... श्रीकृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत उठाया था तो इसी अंगुली का सहयोग लिया और पर्वत को उठाया, तो मैं बड़ी। अंगूठे ने कहा कि मैं बड़ा, कोई भी एग्रीमेंट करो, कोई भी कार्य करना होता है अपना तो ठप्पा लगाना पड़ता है, तो मैं बड़ा। अभी क्या करें, अब एक बूंदी का बड़ा थाल लाया गया और सबको बोला गया, अच्छा जो बड़ी कहते हैं न, तो आप ये लड्डू बनाकर दो, जब किसी से नहीं हुआ तब पांचों अंगुलियों ने सहयोग दिया तब बूंदी का लड्डू तैयार हुआ। तो सर्व के सहयोग से ही सुखमय संसार बनता है। सहयोग के अंदर `योग' शब्द समाया हुआ है। तो ये जीवन में बहुत ज़रूरी है कि हमें कोई भी कार्य करना है तो सबके सहयोग से सेनसिबल प्लानिंग करके करना है और जब हम अच्छी सी प्लानिंग कर लेते हैं तो वापस SUCCESS तो स्टार्ट द वर्क फिर आप अपना जो कार्य है वो शुरु करो तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

अपने जीवन में अगर हम वैल्यूज़ को लेकर चलेंगे तो सफलता ज़रूर मिलेगी। एक बार हर्बन यूनीवर्सिटी में दो स्टूडेंट एक्ज़ाम देने जा रहे थे। एक्ज़ाम शुरू हो गया, वो लेट पहुंचे तो परीक्षक ने पूछा कि आप लोग लेट क्यूं आये ? तो उसने झूठ बोल दिया कि गाड़ी में पंक्चर हो गया था। ठीक है, बोला कोई बात नहीं। दोनों को अलग-अलग कमरे में बिठा दिया और फिर एक से पूछा कि कौनसी साईड का पहिया पंक्चर हुआ, तो उसने बोला राइट साइड वाला पहिया। दूसरे को दूसरे रूम में ले जाकर पूछा कि कौनसी साइड का पहिया पंक्चर हुआ था, तो उसने बोला कि लेफ्ट साइड का हुआ। तो परीक्षक समझ गया कि ये लोग झूठ बोल रहे हैं। फिर उन्होंने कहा कि आप लोगों को बड़े होकर इतना बड़ा बिज़नेस मैन बनना है, आप एम.बी.ए. का एक्ज़ाम देने आये हैं तो जीवन में वैल्यूज़ तो चाहिए ना आगे बढ़ने के लिए। तो वो बच्चे समझ गये कि उनका झूठ पकड़ा गया है। यह बहुत ज़रूरी है, क्योंकि हम देखते हैं कि कई बातों में हमारे पास वैल्यूज़ होती ही नहीं हैं।

एक चुनाव चल रहा था। चुनाव में एक पार्टी सारे लोगों से मिली और बोला कि पांच सौ रुपया लो और हमें ही वोट करना - ठीक है। फिर उन लोगों के पास दूसरी पार्टी भी गयी उनको हज़ार रुपया खिला दिया। तो एक व्यक्ति ने बोला कि देखो तुम्हें एक पार्टी ने 500 रुपया दिया और दूसरे ने तुम्हें 1000 रुपया दिया, अभी तुम किसको वोट दोगे। तो उसने बोला कि जिसने मुझे 500 रुपये दिये। कहा उसको कैसे दोगे, जो तुम्हें ज़्यादा देकर गया उसको देना चाहिए न। तो वह व्यक्ति बोला 500 वाले के अंदर कम करप्शन था, उसने 500 रुपया ही खिलाया। इसके लिए जीवन आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

रशिया में टोलस्टॉय नाम का एक बहुत बड़ा फिलोसोफर हुआ। उसने अपनी किताब में एक बहुत सुंदर मिसाल दी है कि एक ज़मींदार था उसको ज़मीन खरीदनी थी तो वो ट्राइबल एरिया के लोगों के पास गया और कहा कि मुझे ज़मीन का एक टुकड़ा लेना है। तो ट्राइबल एरिया के हेड ने बोला कि आपको ज़मीन का टुकड़ा क्यूं लेना है, चलो मैं आपको सारी ज़मीन ही दे देता हूँ। लेकिन आप क्या करो, जैसे ही सूर्य उदय हो जाये आप दौड़ना शुरु करो और सूर्यास्त के पहले यहां पहुंच जाना और आप जितनी दूर तक दौड़ोगे वो सारी ज़मीन आपकी। उस बिचारे को तो रात में ही नींद नहीं आयी कि कब सुबह हो और मैं दौड़ना शुरु करूं और उसने दौड़ना शुरु किया, जहां दूर-दूर तक भी टुकड़ा दिखाई पड़ता था वहां भी दौड़ा जाता, वहां भी जाये.... वहां भी जाये.... जितना मेरे को मिल सके। सूर्यास्त के पहले तो वह अपनी जगह पर तो पहुंच गया लेकिन बिचारा इतना एग्ज़ोस्ट हो गया.... इतना एग्ज़ोस्ट हो गया कि उधर ही गिर गया। तो ये क्या हुआ, ये है आसक्ति।

तो जैसे हमारा ये विषय है, हमें परमात्मा भी समझाते हैं कि देखो आप सब बिज़नेस मैन हो मैं जानता हूँ। आपलोग बिज़नेस करते हो तो कमाई तो करनी है, आप लोगों को लाइफ में पहल भी करनी पड़ती है, आप लोगों को रिस्क भी लेना पड़ता है, ज़िम्मेवारी भी ज़्यादा आपकी ही होती है, कभी-कभी करते-करते आप टेंशन में भी आ जाते हो। लेकिन मैं मानती हूँ कि तीन प्रकार से हम अपनी वैल्यूज़ को बनाकर रख सकते हैं। पहला प्रकार ऐसा है कि भले आप बिज़नेस करो, भले कमाओ, खुशी से कमाओ, आपको भी लाभ हो, सामने वाले को भी फायदा हो मतलब कि दोनों को, तो इस प्रकार जो पैसा आता है वो दूध के समान होता है, लेकिन दूसरा जो प्रकार है वो व्यवहार का, रीति-नीति तो बिज़नेस की हम सब अच्छी तरह से कर लेते हैं लेकिन जिसको हम कहेंगे कि व्यवहार का जो स्तर है वो थोड़ा कम हो जाता है, तो इस प्रकार से जो पैसे आते हैं वो जैसे पानी मिश्रित दूध के बराबर होता है, तो फायदा भी उतना, सुख-शांति भी इतनी जीवन में और तीसरा ऐसा है कि व्यक्ति समझता है कि इसने तो मेरे को धोखा ही दे दिया माना समान अच्छा नहीं दिया, तो ऐसे जो धोखा होता है उसमें जीवन में कोई सुख-शांति नहीं होती है। तो इसीलिए हमें किसी भी रूप से अपनी वैल्यूज़ को बनाकर रखना है। तो आर्ट ऑफ बैलेंसिंग अर्थात् हमारे अंदर बैलेंस जो है, लाईफ में बहुत ज़रूरी है और वो योग से ही आता है।

योग एक शक्ति है और जितना हम इसे अपनाते जाते हैं उतनी हमारी शक्ति बढ़ती जाती है। कभी-कभी हम कह देते हैं कि क्या करें, हमने नौ बार तो कंट्रोल किया लेकिन 10 वीं बार तो हमें गुस्सा आ ही गया। तो सहन करने की शक्ति हमारे अंदर कम हो गयी है। सहन करने की शक्ति और समाने की शक्ति जैसे आज हमारे अंदर नहीं रही है। वो हम अपने अंदर कैसे राजयोग से ही भर सकते हैं। दुनिया में बहुतों का बहुतों के साथ सम्बंध है - माँ का बच्चे के साथ, मित्र का मित्र के साथ परंतु आत्मा का जो परम आत्मा के साथ सम्बंध है जिसको हम कहते हैं `राजयोग'। `राज माना श्रेष्ठ' तो संस्कारों को जो श्रेष्ठ बनाने वाला योग है वह राजयोग है, कर्मेन्द्रियों का राज बनाने वाला जो योग है वो राजयोग है, तो राजयोग चिंतन की एक ऐसी धारा है जो हमें श्रेष्ठ परिवर्तन की ओर ले जाती है।